आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं.

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन – प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 2 अंक : 6 बीकानेर, फरवरी, 2015 मूल्य : ₹ 2.00

66वें गणतंत्र दिवस समारोह में कुलपति प्रो. (डॉ.) कर्नल ए.के.गहलोत ने वेटरनरी विश्वविद्यालय में ध्वजारोहण कर सलामी दी। इस अवसर पर कुलपति प्रो. गहलोत ने शैक्षणिक,अनुसंधान,प्रसार में उल्लेखनीय कार्यों और पशुचिकित्सा सेवाओं के विस्तार कार्यों में सहयोगी रहे 68 छात्र–छात्राओं,कर्मचारियों, शिक्षकों और राजुवास मित्रों को विशिष्ट कार्य और उपलब्धियों के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

''राजुवास सखा'' योजना और ''सामुदायिक रेडियो'' सेवाओं की शुरूआत होगी

कुलपति के उद्बोधन के प्रमुख अंश

प्रिय छात्रों, कर्मचारियों, शिक्षकों, भाईयों और बहनों।

सभी के मिले–जुले प्रयासों से राजुवास वक्त से पहले तेजी से आगे बढ़ा है। बीता वर्ष 2014 उपलब्धियों से भरपूर रहा। विश्वविद्यालय कार्मिकों की पेंशन की टेंशन खत्म हुई, 121 नए शिक्षकों की भर्ती हुई और राज्य में पशुधन अनुसंधान और पशु चिकित्सा सेवाओं में नए आयाम जुड़े। चित्तौडगढ़ में सातवां पशु अनुसंधान केन्द्र शुरू हुआ, 10 जिलों में पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों ने पूरी तरह कार्य शुरू किया। बीकानेर में पशुओं की क्रिटिकल केयर यूनिट, साहीवाल गौ प्रजनन फॉर्म और वेक्सीनॉलोजी का नया केन्द्र शुरू हुआ व पशुचिकित्सा अवशिष्ट निस्तारण केन्द्र ने नये भवन में कार्य प्रारम्भ किया गया। देशी गौवंश की हैरिटेज जीन बैंक योजना में 100 गौशालाओं की भागीदारी शुरू हुई।

कुलपति प्रो. गहलोत ने नए वर्ष को विश्वविद्यालय में ''ई–सुशासन'' वर्ष के रूप में घोषित किया। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों और कर्मचारियों का पोर्टल बनाया जाएगा। परीक्षाओं को पारदर्शी बनाकर ई–गर्वनेन्स में शामिल किया जाएगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय विद्यार्थी और राज्य के किसानों– पशु पालकों के कल्याण को केन्द्र बिन्दू मानकर कार्य करेगा। विश्वविद्यालय अपनी तमाम योजनाओं और कार्यक्रमों का लाभ गांव–ढ़ाणी में बैठे लोगों तक पहुंचाने के लिए तेजी से कार्यों को अंजाम देगा। इसके लिए विश्वविद्यालय की नई नीति की घोषणा करते हुए कुलपति प्रो. गहलोत ने कहा कि राज्य के 10 हजार गांवों में युवा महिला और पुरूषों को ''राजुवास सखा–सखी'' का दर्जा देकर पशुचिकित्सा की तकनीकी सेवाओं का विस्तार किया जाएगा। इस योजना को जिलों में स्थित पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के मार्फत विभिन्न चरणों में क्रियान्वित किया जायेगा। यह हमारा एक अनूठा प्रयास होगा। इसी वर्ष वेटरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर में अपने पहले ''सामुदायिक रेडियो'' का प्रसारण शुरू करेगा, जिसका पूरा जिम्मा वेटरनरी छात्र/छात्राओं को सौंपा जायेगा।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

मुख्य समाचार

गांव बादेड़ में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

बीकानेर। वीयूटीआरसी बाकलिया द्वारा 10 जनवरी को गांव बादेड़ में बकरियों में होने वाले रोगों के लक्षण व रोकथाम के उपाय विषय पर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। केन्द्र के प्रभारी डॉ. कमल पुरोहित ने पशुपालकों को बकरियों में होने वाले विभिन्न रोगों के बारे में जानकारी एवं उनकी रोकथाम, उपचार के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि बकरी के दूध में वसा की मात्रा कम होने के कारण शिशुओं व बुजुर्गो के लिए अत्यंत लाभकारी है। इस शिविर में 40 पशुपालकों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय पशुधन चैम्पियनशिप एवं पशुधन एक्सपो-2015

बीकानेर। पशुपालन एवं डेयरी विकास बोर्ड, पंजाब सरकार द्वारा वाणिज्यिक एवं उद्योग विभाग के सहयोग से सातवें ''राष्ट्रीय

पशुधन चैम्पियनशिप एवं पशुधन एक्सपो–2015 का मुक्तसर (पंजाब) में 8–12 जनवरी को आयोजित हुआ। इस मेले में निदेशालय प्रसार शिक्षा, राजुवास द्वारा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें निदेशक प्रसार शिक्षा ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित तकनीकों एवं पशुधन स्वास्थ्य, उत्पादन प्रबंधन की जानकारी पशुपालकों एवं किसानों को दी।

गांव बादेला में पशुपालकों का प्रशिक्षण शिविर

बीकानेर। पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र बाकलिया जिला नागौर द्वारा 12 जनवरी को गांव बादेला में संतुलित पशु आहार की उपयोगिता विषय पर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। केन्द्र के प्रभारी अधिकारी ने बताया कि पशुधन सम्पदा से अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि दुधारू पशुओं को हरा चारा व संतुलित आहार पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो तथा पशु को उसके वजन, उत्पादन क्षमता व मौसम के अनुसार पशु आहार खिलाना चाहिए। शिविर में लगभग 35 पशुपालकों ने भाग लिया।

बकरियों में समुचित स्वास्थ्य प्रबंधन पर प्रशिक्षण शिविर

बीकानेर। पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र(वीयूटीआरसी) डूंगरपुर द्वारा 12 जनवरी को ग्राम ढोलका पंचायत सांसरपुर में बकरियों में समुचित स्वास्थ्य प्रबंध विषय पर एक दिवसीय बकरीपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डॉ. सुदीप सोलंकी ने बताया कि डूंगरपुर जिला मुख्य रूप से आदिवासी बाहुल्य होने के कारण यहां बकरीपालन आय का मुख्य स्त्रोत है। बकरियों में मुख्य रूप से कई प्रकार के जीवाणु, विषाणु एवं परजीवी जनित रोग पाये जाते हैं जिसके कारण बकरियों में मृत्यु दर अधिक पायी जाती है। समय पर उनकी रोकथाम किया जाना आवश्यक है। शिविर में महिला पशुपालकों सहित लगभग 35 पशुपालकों ने भाग लिया।

घायल पक्षियों ने उपचार के बाद पुनः उड़ान भरी

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर में मकर संक्रांति के अवसर पर होने वाली पतंगबाजी से घायल 57 पक्षियों का उपचार कर राहत पहुँचाई गई।

संस्थान में चार दिवसीय घायल पक्षियों के निःशुल्क उपचार शिविर के समापन अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत और राजस्थान अधीनस्थ एवं मंत्रालयिक सेवा चयन मण्डल के अध्यक्ष श्री रामखिलाड़ी मीणा ने इलाज के उपरान्त पक्षियों को मुक्त आकाश में विचरण के लिए पुनः छोड़ दिया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. गहलोत ने कहा कि पतंगबाजी या अन्य दुर्घटनाओं में घायल होने वाले पक्षियों के लिए विश्वविद्यालय की बीकानेर और जयपुर क्लिनिक्स में उपचार की पुख्ता व्यवस्थाएं कर पक्षियों को इन्डोर चिकित्सा सुविधा के विशेष प्रबंध किये गए हैं।

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित धीणे री बात्यां के अन्तर्गत फरवरी 2015 में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है।

वार्ताकार का नाम व विभाग		वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
प्रो. राजेश धूड़िया पशुपोषण विभाग	09414283388	चारागाह भूमि का प्रबंधन क्यों व कैसे करें	05.02.2015
डॉ. विजय बिश्नोई पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग	09828122277	जैविक पशुपालन एवं इसका महत्व	12.02.2015
प्रो. जी. एन. पुरोहित पशु मादा रोग एवं प्रसूति विभाग	09414325045	ग्याभिन पशुओं की देखभाल	19.02.2015
डॉ. सुरेश झीरवाल पशु शल्य चिकित्सा एव विकिरण विभाग	09414242872	गायों में पेट सम्बंधी शल्य रोग निदान एवं उपचार	26.02.2015

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शोध कार्य

बकरी (केपरा हीरकस) के थनों और उधस के विकारों का शल्य-शयनिक अध्ययन

प्रस्तुत अध्ययन में बकरियों के 72 थन एवं उधस विकारों का निदान एवं उपचार किया गया है। अध्ययन में थन नालव्रण की मरम्मत के लिए तीन विभिन्न तकनीकों का अध्ययन किया गया है। सभी परतों को वरटिकल मैट्रस सूचर के द्वारा बंद किया गया था(समूह I)। म्यूकोसा और मांसपेशियों को क्रोमिक कैट गट नं. 3/0 से और त्वचा को रेशम के सिम्पल इन्टरैपटिड सूचर से बंद किया गया (समूह II)। म्यूकोसा और मांसपेशियों को क्रोमिक कैट गट नं. 3/0 से तथा त्वचा को ऊतक चिपकने वाले पदार्थ से बंद किया गया (समूह I)। वर्तमान अध्ययन में थन नालव्रण बाहर से अधिग्रहित था। वर्तमान अध्ययन में विभिन्न विकारों को आयु समूहों के अनुसार दर्ज किया गया था और निदान विस्तृत इतिहास और नैदानिक परीक्षण के आधार पर बनाया गया था। विकार उत्पन्न करने के आम कारक कांटेदार तार, कुत्ते का काटना और कांटेदार झाड़ियां आदि थे। थन और उधस विकार 3 से 5 साल की बकरियों में अधिक पाया गया। जो विभिन्न विकार दर्ज किये गये उनमें मिएटस पर घाव, थन मिएटस का सूजन तथा फाईब्रोसिस, थन नहर बाघ, झिल्लीदार बाधा, लैक्टोलिथ, थन में घाव, थन नालव्रण, थनों का कटना, उधस का जलना, उधस एवं थनों का अवसाद, उधस पर चोट, ब्याने के उपरांत उधस का शोथ आदि शामिल है। सभी विकारों का उपचार स्थानीय बेहोशी करके किया गया। थन नालव्रण तीन विभिन्न तकनीकों से किया गया। तीनों समूहों में संतोषजनक ढंग से हीलिंग हुई, लेकिन जहां वरटिकल मैट्रस सूचर लगाए गए थे, वहां कुछ सविन बिंदू देखे गए। अन्य दो तकनीकों में जटिलताओं का सामना नहीं किया गया। टीशू अडैहशिव से कोई ऊतक प्रतिक्रिया नहीं हुई तथा हीलिंग के दौराव घाव की दोनों किनारों को एक दूसरे से चिपका के रखा किन्तु टिशू अडैहशिव का उपयोग अन्य दो तकनीकों से महंगा साबित हुआ।

शोधकर्ता–विरेन्द्र भगत, मुख्य समादेष्टा–डॉ. पी.आर. डूडी

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान-फरवरी, 2015

पशु रोग	पशु प्रकार	क्षेत्र
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जयपुर, धौलपुर हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर,टोंक
ट्रिपनेसोमोसिस (सर्रा, तिबरसा)	गाय, भैंस, ऊँट	धौलपुर, श्रीगंगानगर, भरतपुर, अनूपगढ़, सीकर
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	नागौर, बीकानेर, चुरू, हनुमानगढ़, सीकर, टोंक, झुंझुनुं आदि
एम्फीस्टोमियेसिस	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	भरतपुर, कोटा, धौलपुर
फेसियोलियेसिस	भैंस, गाय, बकरी, भेड़	भरतपुर, कोटा, धौलपुर, डूँगरपुर, हनुमानगढ़, सवाईमाधोपुर, सीकर, उदयपुर
हेमरेजिक सेप्टीसिमिया (गलघोंटू)	गाय, भैंस	सीकर, नागौर, चित्तौड़गढ़, पाली, टोंक, दौसा, बून्दी, भरतपुर, भीलवाड़ा, अलवर
मुँह खुरपका रोग	गाय, भैंस,	दौसा, जयपुर, अनूपगढ़, धौलपुर, अलवर, बारां, भरतपुर, चित्तौड़गढ़, श्रीगंगानगर, नागौर, बीकानेर, सीकर
बबेसियोसिस (खून मूतना)	गाय, भैंस	धौलपुर, बून्दी, डूँगरपुर, अनूपगढ़, चित्तौड़गढ़, सीकर, बीकानेर
माता रोग (चेचक)	भेड़, बकरी	बीकानेर, श्रीगंगानगर, सीकर, अनूपगढ़
लँगड़ा बुखार	गाय	चित्तौड़गढ़, हनुमानगढ़
प्लूरोन्यूमोनिया	बकरी	सीकर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, जोधपुर

इसके अतिरिक्त मुर्गियों में गमबोरो रोग, दीर्घ श्वसन रोग, कोक्सीडिओसिस (खूनी दस्त), गोल एवं फीता–कृमि, कोराइजा, एविएन ल्यूकॉसिस काम्पलेक्स, कोलिबेसिलोसिस (सफेद दस्त) आदि रोगों की सम्भावना है। मुर्गी पालकों से निवेदन है कि इस संबंध में विस्तृत जानकारी विशेषज्ञों से प्राप्त कर लें।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करे – प्रो. (डॉ.) बी.के. बेनीवाल, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं प्रो. (डॉ.) अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग एवं प्रो. (डॉ.) ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास, बीकानेर । फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग

विश्वविद्यालय का पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग पशुओं की नस्ल सुधार से जुड़ा महत्वपूर्ण विभाग है। इस विभाग से शैक्षणिक शोध के साथ पशुओं की नस्ल सुधार में विशेषज्ञ सेवाओं का लाभ पशुपालकों को मिल रहा है। कार्य प्रणाली की दृष्टि से यह विभाग बहुआयामी है जिसमें शैक्षणिक एव शोध कार्य के अतिरिक्त राठी गायों, भेड़ व बकरी की नस्ल सुधार का महत्वपूर्ण कार्य किया जाता है। इस विभाग में आधुनिक कम्प्यूटर प्रयोगशाला, आण्विक आनुवांशिकी प्रयोगशाला, संगोष्ठी कक्ष तथा दो व्याख्यान थियेटर है। एक थियेटर स्मार्ट कक्षा शिक्षण की नवीनतम तकनीक से सुसज्जित है। कम्प्यूटर प्रयोगशाला में 28 कम्प्यूटर टर्मिनल व इंटरनेट की 1 जीबीपीएस की सुविधा है जिसका उपयोग कॉलेज के समस्त छात्र व शोधकर्ता नियमित रूप से करते हैं। आण्विक आनुवांशिकी प्रयोगशाला नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित है जिसका प्रयोग समय–समय पर शोधार्थियों द्वारा शोध के लिए किया जाता है। इस प्रयोगशाला में पशु नस्लों की आण्विक स्तर तक पहचान की जाती है। विभाग द्वारा अब तक 75 से अधिक छात्रों को स्नातकोत्तर और 23 छात्रों को वाचस्पति उपाधियों का अध्ययन करवाया जा चुका है। इस विभाग द्वारा राष्ट्रीय स्तर की अनेकों अनुसंधान परियोजनाओं का संचालन किया गया है। वर्तमान में दो राष्ट्रीय स्तर की परियोजनाओं का संचालन किया जा रहा है। पशुधन सम्पदा के नस्ल सुधार द्वारा पूर्ण उत्पादन लेने और इस विभाग की सेवाओं का लाभ लेकर आम पशुपालक अपने पशुओं की नस्ल सुधार में सक्रिय भागीदार बन सकते हैं। इस विभाग के अधीन राठी गाय नस्ल संवर्द्धन का कार्यक्रम चल रहा है तथा शुद्ध राठी नस्ल की 250 गायों की दुग्धशाला स्थापित है। एक अन्य परियोजना मारवाड़ी बकरी की मांस उत्पादन में वृद्धि हेतु आनुवांशिकी उन्नयन के नाम से संचालित की जा रही है। यह परियोजना भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली तथा राजस्थान सरकार के सौजन्य से चलाई जा रही है। इस परियोजना में बीकानेर जिले के आसपास के जिलों के चयनित ग्रामीण क्षेत्र में अनुसंधान के साथ नवीनतम तकनीकी जानकारी और बकरी पालकों में चेतना का कार्य किया जा रहा है जिससे बकरी पालकों की आय में वृद्धि हो। इस परियोजना के अन्तर्गत मारवाड़ी नस्ल सुधार के लिए देशनोक,रायसर, कल्याणसर, डाईया व कानसिंह की सिड् में उपकेन्द्र संचालित हैं जिसमें सभी पशुपालकों को नस्ल सुधार की दिशा में नई तकनीक का उपयोग और पशुओं से सम्बन्धित समस्याओं के निवारण के लिए वैज्ञानिक उपाय सुझाये जाते हैं, इसके तहत ऐसे बकरी पालकों को चयनित किया जाता है जिनके पास 25 या अधिक मारवाड़ी नस्ल की बकरियां हों। चयनित पशुपालकों को नस्ल सुधार हेतु मारवाड़ी नस्ल के बकरे वितरित किये जाते हैं। बकरियों के उपचार की सुविधा उपलब्ध करवाई जाती है। मगरा भेड़ उन्नयन की राष्ट्रीय परियोजना पूर्व में संचालित की गई। दिसम्बर 2014 में राष्ट्रीय स्तर की विश्वविद्यालयों के नोडल अधिकारियों की कार्यशाला NISAGENET का आयोजन विभाग द्वारा सफलता पूर्वक किया गया।

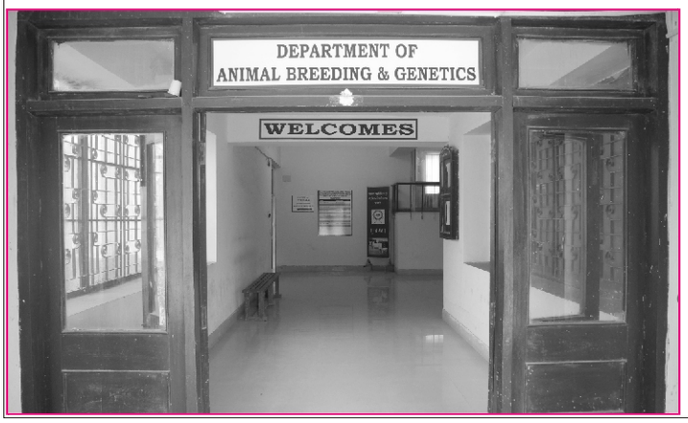

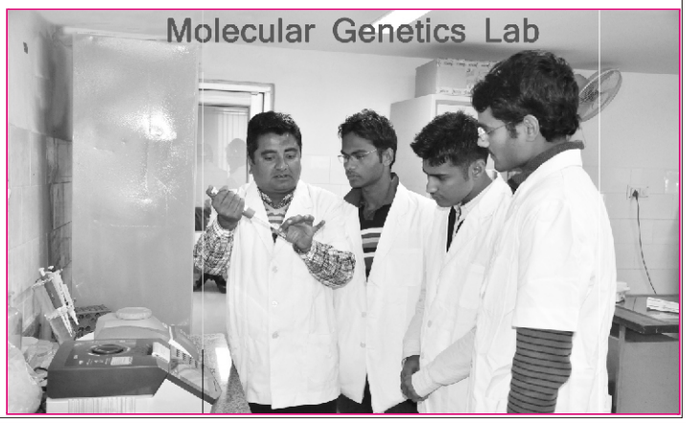

राज्य की प्रजनन नीति एवं क्षेत्रवार नस्लों के चयन में प्राथमिकता

राजस्थान में पशुपालन का विशेष महत्व है, जिसका राज्य की कुल शुद्ध घरेलू आय में 10% से अधिक योगदान है। वर्ष 2012 की पशुगणना के अनुसार राज्य में कुल 577.32 लाख पशुधन है, जिसमें से 133.24 लाख गौवंश तथा 129.76 लाख भैंसवंश हैं। राज्य में देश का 6.98 प्रतिशत गौवंश तथा 11.94 प्रतिशत भैंसवंश है। राज्य में दुधारू व वाहक गौवंश की राष्ट्रीय स्तर पर प्रमाणित कुछ नस्लें जैसे राठी, थारपारकर, गिर, कांकरेज, नागौरी, मालवी एवं हरियाणा बहुतायत में पायी जाती हैं, इसी प्रकार भैंसवंश की मुर्रा एवं सूरती नस्लें सम्पूर्ण राज्य में पायी जाती हैं। राज्य में पशुधन की संख्या के अनुपात में उत्पादकता कम है, जिसका मूल कारण अधिक उत्पादकता वाली शुद्ध देशी नस्लों वाले गौवंश एवं भैंसवंश की संख्या में निरन्तर कमी होना है। साथ ही अवर्गीकृत गौवंश एवं भैंसवंश की संख्या में निरन्तर बढ़ोत्तरी होना है। इसमें तीव्र सुधार किया जाना अत्यन्त आवश्यक है, जो केवल वैज्ञानिक प्रजनन एवं प्रबन्धन से ही संभव है। राजस्थान राज्य में वर्ष 1984 की प्रजनन नीति में संकर प्रजनन पर विशेष बल दिया गया, परन्तु संकर पशुओं से प्रतिकूल जलवायु एवं अन्य परिस्थितियों के कारण वांछित परिणाम प्राप्त नहीं हो सके। इसीलिए वर्ष 1998 में प्रजनन नीति को पुनर्विलोकित एवं पुनरीक्षित किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य चयनात्मक प्रजनन एवं उन्नयन द्वारा देशी नस्लों का संरक्षण एवं संवर्द्धन था। साथ ही स्थानीय पशुपालकों की मांग पर संकर प्रजनन चयनात्मक रूप से उपलब्ध करवाया जाता था। वर्ष 2007 में पशुपालन क्षेत्र में चुनौतियों को देखते हुए प्रौद्योगिकी का समावेश कर पशुधन के तीव्र विकास एवं उत्पादकता हेतु विद्यमान प्रजनन नीति को पुनरीक्षित कर नई प्रजनन नीति बनाई, जिसका उद्देश्य राज्य के पशुधन में सुधार के साथ–साथ पशुपालकों का समन्वित आर्थिक विकास एवं स्वालम्बन करना है। इस हेतु प्रजनन नीति में निम्न बिन्दूओं को सम्मिलित किया गया है।

1. चयनात्मक प्रजनन एवं उन्नयन के माध्यम से (Selective Breeding and Up-gradation) प्रचलित देशी पशुधन नस्लों का आनुवांशिक सुधार एवं अवर्गीकृत पशुधन को उच्च उत्पादन वाली शुद्ध देशी नस्लों से प्रतिस्थापन
2. प्रजनन हेतु उन्नत सांड एवं नर बछड़ों का पालन–पोषण एवं वितरण
3. आधुनिक प्रजनन प्रौद्योगिकी के उपयोग द्वारा उत्कृष्ट जर्मप्लाज्म को विकसित करने हेतु मूलभूत सुविधाओं का विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण (Infrastructure, resources and empowerment)
4. उत्कृष्ट देशी नस्लों का संरक्षण व गौशालाओं एवं पशुपालक समूहों का उन्नयन
5. बेकार सांडों का बधियाकरण एवं क्रमबद्ध रीति से उन्नत सांडों द्वारा उनका प्रतिस्थापन
6. गिर, हरियाणा, मालवी, राठी, कांकरेज, नागौरी व थारपारकर का चयनात्मक प्रजनन एवं उन्नयन, जहां पर ये शुद्धनस्ल के रूप में पाये जाते हैं
7. जलवायु को देखते हुए संकरता का अनुपात 50–62.5 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए। राज्य में संकरता हेतु जर्सी एवं होलस्टीन नस्ल की अनुशंसा की गई है

क्षेत्र/संभाग	गौवंश/भैंसवंश	बहुतायत पाई जाने वाली नस्ल	प्रजनन नीति	सांड़/पाड़ा की नस्ल
जयपुर	गौवंश	हरियाणा, गिर, अवर्गीकृत	चयनात्मक प्रजनन/उन्नयन/संकर प्रजनन	हरियाणा, विदेशी, गिर, संकर
	भैंसवंश	मुर्रा, मुर्रा जैसी	चयनात्मक प्रजनन/उन्नयन	मुर्रा
जोधपुर	गौवंश	थारपारकर, कांकरेज, राठी, अवर्गीकृत	चयनात्मक प्रजनन/ उन्नयन/ संकर प्रजनन	थारपारकर, राठी, कांकरेज, विदेशी संकर
	भैंसवंश	मुर्रा, मुर्रा जैसी	चयनात्मक प्रजनन/उन्नयन	मुर्रा
अजमेर	गौवंश	गिर, नागौरी, अवर्गीकृत, हरियाणा, मालवी	चयनात्मक प्रजनन/उन्नयन/ संकर प्रजनन	गिर, विदेशी, संकर, नागौरी, हरियाणा, मालवी
	भैंसवंश	मुर्रा, मुर्रा जैसी	चयनात्मक प्रजनन/उन्नयन	मुर्रा
बीकानेर	गौवंश	राठी, थारपारकर, नागौरी, हरियाणा, अवर्गीकृत	चयनात्मक प्रजनन/ उन्नयन/ संकर प्रजनन	राठी, विदेशी, संकर, थारपारकर, नागौरी, हरियाणा
	भैंसवंश	मुर्रा, मुर्रा जैसी	चयनात्मक प्रजनन/उन्नयन	मुर्रा
कोटा	गौवंश	गिर, मालवी, अवर्गीकृत	चयनात्मक प्रजनन/ उन्नयन/ संकर प्रजनन	गिर, मालवी, विदेशी, संकर,
	भैंसवंश	मुर्रा, मुर्रा जैसी	चयनात्मक प्रजनन/उन्नयन	मुर्रा
भरतपुर	गौवंश	हरियाणा व अवर्गीकृत	चयनात्मक प्रजनन/ उन्नयन/ संकर प्रजनन	हरियाणा, संकर, विदेशी
	भैंसवंश	मुर्रा, मुर्रा जैसी	चयनात्मक प्रजनन/उन्नयन	मुर्रा
उदयपुर	गौवंश	गिर, अवर्गीकृत	चयनात्मक प्रजनन/ उन्नयन/ संकर प्रजनन	गिर, विदेशी, संकर
	भैंसवंश	सूरती, सूरती जैसी	चयनात्मक प्रजनन/ उन्नयन/ संकर प्रजनन	सूरती एवं मुर्रा

डॉ. बरखा गुप्ता एवं डॉ. सुनीता पारीक, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, वल्लभनगर

भेड़-बकरियों में माता रोग

यह एक बहुत तेजी से फैलने वाला विषाणुजनित संक्रामक रोग है। यह रोग हवा द्वारा, आपसी सम्पर्क द्वारा तथा कीट–मक्खी इत्यादि से फैलता है। इस रोग से ग्रसित पशुओं में मृत्यु दर अधिक होती है। इस रोग का विषाणु सर्वप्रथम हवा द्वारा पशु के श्वसन तंत्र में पहुंचता है तथा पशु के मुंह तथा नाक के स्त्राव में उपस्थित रहता है। यह रोग सबसे ज्यादा कम उम्र, बूढ़े एवं कमजोर पशुओं को प्रभावित करता है। इस रोग में पशु को शुरूआत में तेज बुखार आता है, पूरे शरीर पर माता के दाने निकल आते हैं और बाद में सांस लेने में तकलीफ होती है व नाक से मवादयुक्त स्त्राव आने लगता है। मेमनों में कई बार माता के निशान दिखने से पहले ही मृत्यु हो जाती है। तेज बुखार आने पर पशुपालक को चाहिए कि शरीर के बाल रहित भाग जैसे कि पूंछ के नीचे,नाक, होंठ इत्यादि को देखकर माता के निशानों की पहचान करें। इस रोग में न्यूमोनिया तथा गर्भपात भी हो सकता है। भेड़–बकरियों में माता रोग होने पर ग्रस्त पशुओं को स्वस्थ पशुओं से तुरंत अलग कर देना चाहिए। बीमार पशु को नरम चारा देना चाहिए एवं न्यूमोनिया या अन्य संक्रमण से बचाव के लिए पशुचिकित्सक से संपर्क कर उचित एंटीबायोटिक दवाईयों का प्रयोग करें।

यह एक विषाणुजनित बीमारी है और इसका इलाज संभव नहीं है, लेकिन इस रोग का टीकाकरण से बचाव संभव है। इस रोग का नियंत्रण ही बचाव है। अतः इस रोग का टीकाकरण अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अतः पशुपालकों को पशुचिकित्सक से सलाह लेकर अपने पशुओं का माता रोग से बचाव के लिए टीकाकरण करवाना चाहिए। टीकाकरण के समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि पशु किसी भी रोग से ग्रस्त न हों। किसी भी प्रकार की समस्या होने पर पशुपालकों को अपने निकटतम पशु चिकित्सक से तुरंत सम्पर्क करना चाहिए तथा अपने पशुओं की उचित देखभाल करनी चाहिए।

– प्रो. (डॉ.) ए. के. कटारिया, एपेक्स सेन्टर,
राजुवास (मो. 9460073909)

ग्याभिन गायों और हष्ट-पुष्ट मवेशियों में सर्दी के असर को कम करने के तरीके

1. गाय को पर्याप्त मात्रा में खाना दें ताकि तेज सर्दी से पहले पशु पर्याप्त वजन ले सके । शरीर में जमा चर्बी इन्सुलेशन का काम करती है और पशु को तेज सर्दी में अतिरिक्त ऊर्जा प्रदान करती है। जब खाना आवश्यक ऊर्जा प्रदान नहीं कर पाये तो, उन्हें अतिरिक्त राशन देना चाहिए ।
2. अगर संभव हो सके तो तेज सर्दी से पहले बछड़े का दूध छुड़वा देना चाहिए ताकि गाय की पोषण की आवश्यकता कम हों और बछड़ा नये खाने के लिए अनुकूलित हो जाये ।
3. पशुओं को सीधी हवा से बचाना चाहिए । शीत लहर और तेज सर्दी से बचाने हेतु पशुओं के आवास की सीमा एवं दीवारों के सहारे शैल्टर बेल्ट और लम्बे पेड़ों की बाड़ साथ लगानी चाहिए । शैल्टर बेल्ट एवं बाड़ लकड़ी, धातु, बेल, टायर और अन्य किसी वस्तु के बने हो सकते हैं ।
4. पशुओं को अच्छा और सूखा बिस्तर देना चाहिए और उसे समय –समय पर बदलते रहना चाहिए । ब्याने से पहले और उपरान्त सूखी तूड़ी का बिस्तर देना चाहिए । बिस्तर बनाने के लिए बाजरे एवं मक्के के तने के डंठल भी उपयोग ले सकते हैं ।
5. हष्ट –पुष्ट मवेशियों की खाद्य चरनी या खाने की जगह को पाळे व बर्फ से बचायें । यदि गायों को जमीन पर खिलाया जाता है तो हर दिन एक नये और साफ क्षेत्र पर खाना फैलायें ताकि वो होने वाली संभावित बीमारियों से बच सकें ।
6. ठण्ड के दौरान पशुओं को अधिक भूख लगती है अतः वो अधिक मात्रा में भोजन ग्रहण करते हैं। इससे उसके आंत्र की गति तेज हो जाती है और उसे पतले दस्त लगते हैं जिसकी वजह से खाद्य पदार्थ का पूरा पाचन नहीं हो पाता है अतः उनकी प्रोटीन व ऊर्जा की आवश्यकता पूरी करने के लिए अच्छे स्तर का खाना देना चाहिए जैसे कि प्रोटीन व ऊर्जा हेतु पूरक खाद्य पदार्थ।
7. ज्यादा नमी वाला खाना नहीं देना चाहिए क्योंकि वह खाद्य चरनी में जम जाता है। इससे खाने का सेवन कम हो जाता है, पाले से जमा हुआ खाना पिघलने और पचाने में अधिक ऊर्जा लेता है ।
8. गायों को पोषक तत्वों की आवश्यकता के अनुसार क्रमबद्ध एवं छंटनी करें और उन्हें आवश्यकता अनुसार खिलायें ।
9. पशुओं की छंटनी, कुछ जानवरों के अतिरिक्त खाने को कम करने और पतली गायों के वजन हासिल करने में सहायक है।
10. तेज सर्दी में पशुओं को दिन में देर से खाना दें । खाने और जुगाली में शामिल गतिविधि रात के समय जानवरों में गर्मी उत्पादन में वृद्धि करती है। यह तरीका ब्यात होने वाली गायों में, दिन के समय ब्यात होने की संभावना को बढ़ाती है।
11. जानवरों को हर समय स्वच्छ, ताजा पानी पर्याप्त मात्रा में दें। जब ताजा पानी दें तो उसे गर्म करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि ताजा पानी गुनगुना गर्म होता है।
12. शीत लहर एवं बर्फानी तूफान के लिए तैयार रहें । अपने फार्म की सुरक्षा हेतु एक विद्युत उत्पादन यंत्र (जेनरेटर) तैयार रखें ताकि बर्फीले तूफान के दौरान विद्युत उपकरण चालू कर सकें जो कि

शेष पेज 7 पर....

सफलता की कहानी

युवा गौपालक भवानी बने बेरोजगारों के लिए प्रेरणा के स्त्रोत

बीकानेर शहर के युवा गौपालक भवानीसिंह राजपुरोहित को कभी काम तथा नौकरी की तलाश करने की जरूरत नहीं पड़ी। 21 वर्ष की अवस्था में महाविद्यालय से बी.ए के छात्र रहे भवानीसिंह ने गौपालन को एक व्यवसाय रूप में शुरू करने की जो ठान ली थी। उनके परिवार में 2–3 गाय सदैव रहती थी, जिसका उपयोग घर की जरूरतों को पूरा करने के लिए किया जाता रहा। यहीं से उन्हें गौपालन की प्रेरणा मिली और एक गाय से भवानी डेयरी व्यवसाय की शुरूआत की। जिसके दूध की बिक्री हाथों–हाथ हो गई। धीरे–धीरे एक से 10 गायें हो गई। दूध की मांग और अपनी जरूरतों को देखते हुए घर के अलावा एक अन्य बाड़े में गौपालन कार्य को विस्तार दिया। आज उनके पास 55 गायें और 12–13 बछड़े–बछड़ियां हैं। इनमें से 44 गायें दुधारू हैं,जिनसे लगभग 380 लीटर दूध का उत्पादन प्रतिदिन ले रहे हैं। मौहल्ले में सुबह–शाम की काउन्टर बिक्री के कारण दूध के परिवहन की कोई समस्या नहीं रहती। युवावस्था से ही गौपालन शुरू करने से भवानी ने गायों के खान–पास की व्यवस्था और हारी–बीमारियों के उपचार में भी दक्षता प्राप्त कर ली। वे संतुलित आहार के बांटे में खल,मूंग और उड़द की चूरी, चापड़ और गुड़ देते हैं। चारे के रूप में सेवण,कुत्तर और पाला तथा साथ में 10 दिन के अंतराल से ओरल कैल्शियम और खनिज लवण भी बराबर देते हैं। भवानी अपनी समझ और ज्ञान से गायों का समय पर टीकाकरण और छोटी–मोटी बीमारियों का उपचार स्वंय ही कर लेते हैं। वे अपनी डेयरी कार्य में 4 श्रमिकों को मजदूरी का भुगतान भी करते हैं। 35 वर्षीय भवानीसिंह राजपुरोहित ने युवावस्था में ही सूझ–बूझ और दूरदर्शिता का परिचय दिया और आज वे अपने पैरों पर खड़े होकर अपने परिवार का भरण–पोषण भली प्रकार करते हैं। समाज में भी उनकी प्रतिष्ठा में चार चांद लगे हैं। बेरोजगार घूम रहे युवाओं के लिए वे एक प्रेरणा के स्त्रोत बने हैं। **(सम्पर्क–भवानीसिंह राजपुरोहित, मो. 9413389348)**

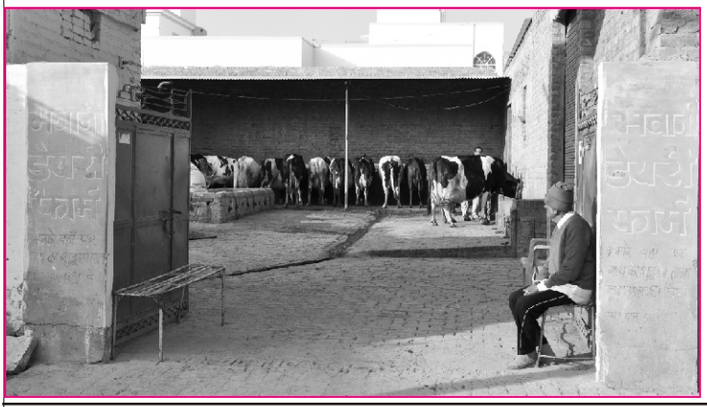

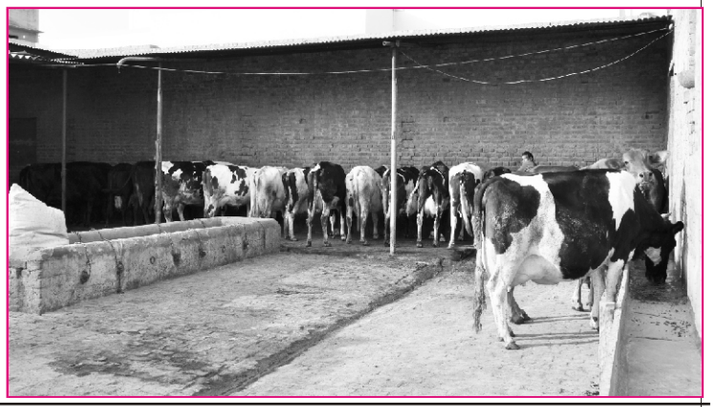

....पेज 6 का शेष **ग्याभिन गायों**

फार्म पर उष्मा प्रदान करने तथा उचित वायुदाब प्रदान करने एवं पानी की उपलब्धता बढ़ाने में मदद करें । बर्फीले तूफान के दौरान कुछ अतिरिक्त श्रमिकों की व्यवस्था रखनी चाहिए ताकि खाने–पीने वाले स्थानों से आपात की स्थिति में बर्फ हटायी जा सके।

13. जब तक पर्याप्त मात्रा में प्रबंधन तकनीकें, उचित श्रमिक एवं वायु प्रबंधन ना हो तब तक उन्हें बंद आवासों में खाना ना खिलाएं क्योंकि बंद आवास में अमोनिया व मिथेन सान्द्रण बंद आवास की वायु गुणवता घटाती है एवं पशु की दूषित वायु से मृत्यु हो सकती है। बंद आवास में उच्च नमी एवं पशुओं की भीड़ आवास में उनके सर्दी से बचने की क्षमता को घटाती हैं। बीमारियों के संक्रमण की संभावना भी उच्च आर्द्रता एवं पशुओं की भीड़ वाले स्थानों पर अधिक होती है।
14. ब्याने व प्रजनन करने वाले पशुओं को अधिक सुलभ आवास प्रदान करें जिससे वो अपने व्यवहार को बनाये रखें तथा फार्म मालिक भी उनकी निगरानी कर सकें ।
15. शीत लहर के दौरान पशु की गति बंद ट्रकों में होनी चाहिए ताकि शीत लहर के प्रभाव एवं तनाव से बच सकें ।
16. नवजात बछड़ों की उचित स्वास्थ्य एवं उचित प्रबंधन हेतु बाड़े तैयार रखने चाहिए ताकि उन्हें शीत लहर के प्रभाव से बचाया जा सके। **–डॉ. विवेक महला, डॉ. संजय कुमार, डॉ. सरोज चौधरी, राजुवास (मो. 9001303833)**

निदेशक की कलम से...

राज्य में देशी गौवंश के संवर्द्धन से दुग्ध उत्पादन में बढ़त संभव

राजस्थान दूध उत्पादन में देश में दूसरे स्थान पर है। उत्तरप्रदेश इसमें बढ़त बनाए हुए है। राज्य में लगभग एक करोड़ 15 लाख देशी नस्ल की गायें हैं। राज्य में पहली बार अलग से गोपालन विभाग खोलने से गौ संरक्षण और देशी नस्लों के संवर्द्धन कार्यों को एक नई दिशा मिल सकेगी। देशी गौवंश ढ़ाणी और गांव में बैठे किसान और पशुपालकों के आर्थिक उन्नयन का एक प्रमुख जरिया है। गाय से दूध,दही,मक्खन,घी, और छाछ जैसे उत्पाद रोजमर्रा के खान–पान में एक प्रमुख कारक के रूप में होते हैं, लेकिन भौतिक युग में अनावश्यक जरूरतों को पूरा करने के फेर में हम इससे विमुख होते जा रहे हैं। इस पर चिंतन की जरूरत है। देशी गौवंश का पालन कम खर्च में अधिक मुनाफा देने वाला है। स्थानीय जलवायु में सरलता से जीवन यापन करने वाली गाय हमारे लिए सर्वथा अनुकूल है। विदेशी नस्ल और संकर गायों से अधिक दूध लेने की होड़ और उनकी सार संभाल छोटे और मझौले पशुपालकों के अनुकूल नहीं है। ठीक इसके विपरीत स्वदेशी गायों में दुग्ध उत्पादन की पूरी क्षमता है लेकिन हम इसका पूरा दोहन नहीं कर पा रहे हैं। राज्य में देशी गाय दूध उत्पादन में अच्छी बढ़ोतरी के साथ ही आम जन को आसानी से गुणवत्ता और औषधीय गुणों वाला दूध देने में पूरी तरह सक्षम है। इसके मद्देनजर राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के प्रयासों से राज्य में देशी गाय राठी, थारपारकर और साहीवाल की तैयार की गई संवर्द्धित नस्लों से 25 लीटर दूध का उत्पादन प्रतिदिन तक पहुंचा है। वेटरनरी विश्वविद्यालय ने राठी गाय के लिए बीकानेर और नोहर(हनुमानगढ़) में, थारपारकर के लिए चांदन (जैसलमेर) व बीछवाल (बीकानेर) और साहीवाल के लिए कोड़मदेसर (बीकानेर) स्थित पशु अनुसंधान और प्रजनन केन्द्रों पर वैज्ञानिक रखरखाव से यह सफलता अर्जित की है। यह देशी नस्ल की प्रदेश में उपलब्ध लाखों गायों से होने वाले प्रति गाय के औसतन दूध उत्पादन की तुलना में दो से चार गुना ज्यादा है। विश्वविद्यालय अगले चरण में धरोहर जीन बैंक के तहत राज्य की गौशालाओं और पशुपालकों को इन प्रजनन केन्द्रों में तैयार श्रेष्ठ नस्ल के नंदी/सांड भी उपलब्ध करवा रहा है। प्रदेश की गौशालाओं में इन श्रेष्ठ नस्ल के सांडों से प्रजनन करवाने के सार्थक परिणाम मिलेंगें। इससे होने वाली बछड़ियों, के गाय बनने पर सर्वाधिक दुग्ध उत्पादन लिया जा सकेगा। देशी गौवंश का दूध उत्पादन बढ़ने से पशुपालकों के साथ ही आमजन को सीधा फायदा मिलेगा,इससे गायों के महत्व, सुरक्षा और उनके पालन के प्रति लोगों में लगाव बढ़ेगा।

प्रो. (डॉ.) त्रिभुवन शर्मा, प्रसार शिक्षा निदेशक

मुस्कान !

पशुपालक प्रशिक्षण कार्यक्रम की सूचना

पशुपालक/किसान भाईयों के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा फरवरी और मार्च 2015 में निःशुल्क प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाएगा। प्रशिक्षण में उन्नत पशु आहार, हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से हरे चारे के उत्पादन, हरा चारा संरक्षण उपायों के बारे में तथा पशु आहार की विविध नवीनतम तकनीकी जानकारी दी जाएगी। ये प्रशिक्षण शिविर विश्वविद्यालय के वेटरनरी कॉलेज बीकानेर, वेटरनरी कॉलेज, नवानियाँ, वल्लभनगर (उदयपुर) और स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर परिसरों में आयोजित किये जायेंगे। इच्छुक पुरूष/महिला पशुपालक और किसान जो इसमें भाग लेना चाहते हैं वे निम्न पते पर संपर्क करें :–

मुख्य अन्वेषक–पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र,
राजुवास, बीकानेर (मो.9414283388)

संपादक
प्रो. त्रिभुवन शर्मा
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पशु पालन नए आयाम
मासिक अंक : फरवरी, 2015

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजूवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. त्रिभुवन शर्मा द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजूवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. त्रिभुवन शर्मा